Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 5 ~ Issue 1 (2017) pp: 122-127
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

रामायण कृति की विषयवस्तु

डा. उर्मिला मीणा
सहआचार्य संस्कृत
महारानी श्री जया महाविद्यालय,
भरतपुर (राज.)

रामायण –

रामायण को अपने काव्यमर्म में प्रतिष्ठित करने वाली वाल्मीकीय रामायण में भारत वर्ष के सुदूर अतीत की गौरव–गरिमा सर्वस्वत्या प्रचण्ड शौर्य, अद्भुत सहिष्णुता एवं सौम्य शील की ओजस्विनी छटा प्रस्फुटित होती है। इसमें मुख्यतः व्याघ के बाण से विद्व कौञ्च तथा उसके शोक में आकुल कौञ्ची की करुण चीत्कार को सुनकर भावविह्ल हो जाने वाले वाल्मीकि की मर्मव्यथा अभिव्यक्त हुई है। यह व्यथा एक अधिकार योगी मानव की सर्वस्वत्यागमयी उत्तम मानवता के आख्यातो में निहित है। प्राचीन भारत के कैलाशशिखररूपी इस आदिकाव्य में रामकथा के रूप में हरद्वार की वन्या भागीरथी का खरतर वेग सा प्रवाहित हुआ है।

संक्षेप में रामायण की कथावस्तु के निम्नांकित प्रेरक तत्व कहे जा सकते हैं–

1. निषाद के बाण से विद्व कौञ्च पक्षी के शोक में कौञ्ची के करुणा क्रन्दन को सुनकर भावविह्ल हुए वाल्मीकि की मर्मव्यथा को श्लोकबद्ध रामचरित के माध्यम से अभिव्यक्त करना।
2. रामस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वमृषिसत्तम।
   धर्मात्मनो भगवतो लोके रामस्य धीमतः।। वा.रा., 1/2/32
   ब्रह्म के इस आदेश से श्रीराम के रहस्यपूर्ण तथा प्रसिद्ध चरित का विशदता से वर्णन करना।
3. वैदेह्यश्चैव यद् वृत्तं प्रकाशं यदि वा रहः। वा.रा. (1/2/34)
4. कैयेयी द्वारा प्रार्थित दो वरदान तथा उमसे होने वाले लाभ–हानि का वर्णन करना। जैसा कि रामायणसोपानकार ने कहा है–

   वाल्मीकिराभ्यां (वराभ्याम्) करुणां रसार्द्राम्
   रामायणं काव्यकृतिचकार रा.सो. (6/50)

इसके पाने का अधिकार चारों वर्णों को है, जिनमें ब्राह्मण तो इसके पढ़ने से शब्दब्रह्म में पारंगत हो जाता है, क्षत्रिय को राज्य, वैश्य को धनसमृद्धि तथा शूद्र को महत्त्व प्राप्त होता है। यहाँ शूद्र के लिए जो फल कहा गया है, वह उसे रामायण के श्रवण से प्राप्त होता है। अतः उसका अधिकार रामायण के सुनने से ही है; पढ़ने से नहीं क्योंकि जैसे गायत्री मन्त्र का अधिकारी शूद्र नहीं होता वैसे गायत्री प्रतिपाध अर्थ का ही प्रतिपादन होने से रामायण के पठन में भी शूद्र का अधिकार नहीं है।

बालकाण्ड की कथावस्तु

वाल्मीकि के प्रति वर्णित रामायण की समग्र वस्तु में बालकाण्ड की कथाओं का उल्लेख नहीं हुआ। वाल्मीकि द्वारा समाधियोग से साक्षात्कृत विषयों में इस काण्ड के मुख्य विषय अवश्य उस्लिखित हुए है। जैसे– रघुवंशचरित्र, रामजन्म विश्वामित्र के साथ राम–लखन का यज्ञरक्षार्थ गमन, धनुर्भङ्ज जानकी का विवाह तथा राम–परशुराम–विवाद इस काण्ड में मुख्य प्रतिपाध विषय भी वस्तु यही है।

यह कथा अवध की है अवध में सरयू नहीं के किनारे एक अति सुन्दर नगर था अयोध्या। सही अर्थों में दश्नीय। देखने लायक वह कोमल राज्य की राजधानी था। राजा दशरथ वही रहते थे। महान् अज के पुत्र महाराजा रघु के वंशज। रघुकुल के उत्तराधिकारी राजा दशरथ यशस्वी था। उन्हें किसी चीज की कमी नहीं थी राज सुख था उसके तीन रानियाँ थीं कौशल्या सुमित्रा और कैकेयी। महारानी कौशल्या ने राम को जन्म दिया। सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुध्न। रानी कैकेयी के पुत्र का नाम भरत रखा गया, चारों भाइयों में आपस मे बहुत प्रेम था वे अपने बड़े भाई राम की आज्ञा मानते थे। खेलकूद में लक्ष्मण प्रायः राम के साथ रहते भरत और शत्रुध्न की एक अलग जोड़ी थी और चारो भाइयों को शिक्षा दिक्षा के लिए भेजा गया। उन्होंने कुशल और अपनी विद्या में दक्ष गुरूजनों से ज्ञान अर्जित किया। शास्त्रों का

अध्ययन किया। शास्त्र विद्या सीखी। चारों राजकुमार कुशाग्र–बुद्धि था। राम इसमें सर्वोपरि थे। उनमें अन्य गुण भी थे। विवेक, शालीनता और न्यायप्रियता, राजा दशरथ को राम सबसे अधिक प्रिय थे। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण। और अन्य मानवीय गुणों के कारण भी राजकुमार कुछ और बड़े हुए विवाह योग्य एक दिन ऐसी ही चर्चा चल रही थी गहन मन्त्रणा। तभी एक द्वारपाल घबराया हुआ अन्दर आया। उसने सूचना दी कि महर्षि विश्वामित्र पधारे हैं। महाराज दशरथ तत्काल अपना आसन छोडकर खडे हो गये और उन्हें लेकर दरबार में गए विश्वामित्र को ऊँचा आसन दिया गया। महर्षि के स्वागत–सत्कार के बाद दशरथ ने कहा ''महर्षि आज्ञा दें, में आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ आप अपने मन की बात कहिए आपकी आज्ञा का पूरी तरह पालन होगा।''

'राजन' मैं जो माँगने जा रहा हूँ, उसे देना आपके लिए कठिन होगा।''

''आप आज्ञा दीजिए महर्षि : मैं उसे पूरा करने के लिए तत्पर हूँ, बिलकुल नहीं हिचकूँगा।''

''मैं सिद्धि के लिए यज्ञ कर रहा हूँ। अनुष्ठान लगभग पूरा हो गया है, लेकिन दो राक्षस उसमें बाधा डाल रहे हैं। मैं जानता हूँ कि उन राक्षसों को केवल एक ही व्यक्ति मार सकता है। वह राम है। आप अपने ज्येष्ठ पुत्र को मुझे दे दो ताकि यज्ञ पूरा हो'' विश्वामित्र ने कहा।

दशरथ पर जैसे बिजली गिर पड़ी वे अचकचा गए उन्हें उम्मीद नहीं थी कि मुनिवर उनसे राम को माँग लेंगे उनसे विश्वामित्र दशरथ की दुविधा समझ रहे थे। उन्होंने कहा ''मैं राम को कुछ दिनों के लिए माँग रहा हूँ यज्ञ दस दिन में सम्पन्न हो जायेगा'' विश्वामित्र ने कहा।

महाराजा दशरथ दुःखी हो गए। पुत्र–वियोग की आशंका से काँप उठे दरबार में सन्नाटा छा गया दशरथ की दशा देखकर मंत्री चिन्तित थे। पर चुप थे।

दशरथ ने मुनि वशिष्ठ की बात दुःखी मन से स्वीकार कर ली लेकिन वह राम को अकेले नहीं भेजना चाहते थे। उन्होंने विश्वामित्र से आग्रह किया। कहा कि वे राम के साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण को भी ले जाएँ। महर्षि विश्वामित्र ने महाराजा दशरथ का आग्रह स्वीकार कर लिया। राम लक्ष्मण को तत्काल दरबार में बुलाया गया महाराजा दशरथ ने उन्हें अपने निर्णय की सूचना दी दोनों भाइयों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। सिर झुकाकर आदर सहित दोनों राजकुमार बिना बिलम्ब किए महर्षि के साथ चल पड़े बीहड और भयानक जंगलों की ओर विश्वामित्र आगे–आगे चल रहे थे। राम उनके पीछे थे। लक्ष्मण राम दो कदम पीछे। अपना धनुष संभाले हुए। पीठ पर तुणीर बाँधे कमर में तलवारें लटकाए। वे चलते रहे राजमहल पीछे छूट गया, राम और लक्ष्मण ने एक बार भी पीछे मुड़करन नहीं देखा उनकी नजर सामने थी महर्षि विश्वामित्र के सधे कदमों की ओर महर्षि अचानक रुके और कहने लगे हम आज रात नदी तट पर ही विश्राम करेंगे। महर्षि ने पीछे मुडते हुए कहा। दोनों राजकुमारों के चेहरे के भाव देखते हुए विश्वामित्र–हल्का–सा–मुस्कराए। राम के निकट आते हुए उन्होंने कहा ''मैं तुम दोनों को कुछ सिखाना चाहता हूँ इन्हें सीखने के बाद कोई तुम पर प्रहारनहीं कर सकेगा। उस समय भी नहीं जब तुम नींद में रहो।

राम और लक्ष्मण नदी में मुँह–हाथ धोकर लौटे। महर्षि के निकट आकर बैठे। विश्वामित्र ने दोनों भाइयों को ''बला–अतिबला'' नाम की विद्याएँ सिखाईं। रात में वे लेाग वही सोए। सुबह हुई यात्रा फिर शुरू हुई मार्ग वही था सरयू नदी के किनारे किनारे चलते–चलते वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ दो नदियाँ आपस में मिलती थीं उस संगम की दूसरी नदी गंगा थी महर्षि अब भी आगे चल रहे थे। लेकिन राम–लक्ष्मण अब दूरी बनाकर नहीं चलते थे। महर्षि के ठीक पीछे थे। ताकि उनकी बातें ध्यान से सुन सकें। रास्ते में पड़ने वाले आश्रमों के बारें में। वहाँ के बारे में। वृक्षों–वनस्पतियों के सम्बन्ध में। स्थानीय इतिहास उसमें शामिल होता था।

आगे की यात्रा कठिन थी। जंगलों से होकर महर्षि विश्वामित्र को उचित नहीं लगा। तीनों लोग वही रुक गए संगम पर बने आश्रम में। अगली सुबह उन्होंने नाव से गंगा पार की।

नदी पार घना जंगल था दुर्गम सूरज की किरणे धरती पर नहीं पहुँचती थी इतना घना। वह डरावना भी था हर ओर से झीगरों की आवाज़। जानवरों की दहाड। कर्कश ध्वनियाँ। राम और लक्ष्मण को आश्वस्त करते हुए महर्षि ने कहा ''ये जानवर और वनस्पतियाँ जंगल की शोभा है। इनसे कोई डर नहीं है। असली खतरा राक्षसी ताडका से है। वह यही रहती है। तुम्हें वह खतरा हमेशा के लिए मिटा देना है।'' उस का डर इतना था कि उस सुन्दर वन का नाम ''ताडका वन'' पड़ गया था। राम ने महर्षि की आज्ञा मान ली। धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई और उसे एक बार खींचकर छोडा इतना ताड़का को क्रोधित करने के लिए बहुत था। टंकार सुनते ही क्रोध से बिल–बिलाई ताड़का गरजती हुई राम की ओर दौड़ी। दो बालकों को देखकर उसका क्रोध और भड़क उठा। ताडका ने पत्थर बरसाने शुरू कर दिए राम ने उस पर बाण चलाए। लक्ष्मण ने भी निशाना साधा राम का एक बाण उसके हृदय में लगा। वह गिर पड़ी फिर नहीं उठ पाई।

विश्वामित्र बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने राम को गले लगा लिया। उन्होंने दोनों राजकुमारों को सौ तरह के अस्त्र–शस्त्र दिए। उनका प्रयोग करने के विधि बताई उनका महत्त्व समझाया।

*Corresponding Author: डा. उर्मिला मीणा

विश्वामित्र यज्ञ की तैयारियों में लग गये अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। आश्रम की रक्षा की जिम्मेदारी राम–लक्ष्मण को सौंपकर महर्षि आश्वस्त थे। अनुष्ठान अपने अन्तिम चरण में था। अनुष्ठान का अन्तिम दिन अचानक भयानक आवाजों से आसपास भर गया सुबाहु और मारीच ने राक्षसों के दल बल के साथ आश्रम पर धावा बोल दिया मारीच क्रोधित था यज्ञ के अलावा भी इस बात से कि राम–लक्ष्मण ने उसकी माँ को मारा था ताड़का को।

राम ने राक्षसों का हमला होते ही कार्यवाही की। धनुष उठाया और मारीच को निशाना बनाया। बाण के वेग से बहुत दूर जाकर गिरा समुद्र के किनारे वह मरा नहीं। जब होश आया तो उठकर दक्षिण दिशा की ओर भाग गया। राम का दूसरा बाण सुबाहु को लगा उसके प्राण ही निकल गए। सुबाहु के मरने पर राक्षस सेना में भगदड मच गई। वे चीखते चिल्लाते भागे। कुछ लक्ष्मण के बाणों का शिकार हुए। अन्य जान बचाकर भाग खडे हुए। महर्षि विश्वामित्र का अनुष्ठान संपन्न हुआ।

राम ने महर्षि को प्रणाम करते हुए पूछा, ''अब हमारे लिए क्या आज्ञा है। मुनिवर? महर्षि ने राम को गले लगाया। कहा, ''हम लोग यहाँ से मिथिला जायेंगे। महाराज जनक के यहाँ। विदेहराज के दरबार में। मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों मेरे साथ चलो। उनके आयोजन में हिस्सा लेंगे। महाराज के पास एक अद्भुत धनुष है। तुम भी उसे देखो।''

राम और लक्ष्मण अगली यात्रा को लेकर उत्साहित थे। नए स्थान देखने और जानने का अवसर। वे गौतम ऋषि के आश्रम से होते हुए नगर में पहुँचे।

राजा जनक ने महल से बाहर आकर विश्वामित्र का स्वागत किया। तभी उनकी दृष्टि राजकुमारों पर पड़ी। विदेहराज चकित रह गए। वे स्वयं को रोक नहीं पाए। महर्षि ने पूछा, ''ये सुन्दर राजकुमार कौन हैं? मैं उनके आकर्षण से खींचता जा रहा हूँ।'' 'ये राम और लक्ष्मण हैं महाराज दशरथ के पुत्र। मैं इन्हें अपने साथ लाया हूँ। आपका अद्भुत धनुष दिखाने।

अगले दिन सभी आमन्त्रित लोग यज्ञशाला में उपस्थित हुए। महाराज जनक ने अपने अनुचरों को आज्ञा दी ''शिव–धनुष को यज्ञशाला में लाया जाए।''

शिव–धनुष सचमुच विशाल था।'' लोहे की पेटी में रखा था। धनुष देखते ही विदेहराम एक पल के लिए उदास हो गए।

उन्होंने कहा, ''मुनिवर! मैंने प्रतिज्ञा की है। अपनी पुत्री सीता के विवाह के सम्बन्ध में। जो यह धनुष उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढा देगा। उसी के साथ सीता का विवाह होगा। अनेक राजकुमारों ने प्रयास किया और लज्जित हुए। उठाना तो दूर वे उसे हिला तक नहीं सके प्रत्यञ्चा क्या चढाते।

विदेहराम का संकेत समझकर महर्षि विश्वामित्र ने राम से कहा, ''उठो वत्स! यह धनुष देखो।' गुरू की आज्ञा स्वीकार की। आगे बढे। पेटी का ढक्कन खोल दिया राम ने पहले धनुष देखा फिर महर्षि को। गुरू का संकेत मिलने पर राम ने एक विशाल धनुष सहज ही उठा लिया यज्ञशाला में उपस्थित भी लोग हतप्रभ थे।

''इसकी प्रत्यंचा चढ़ा दूँ, मुनिवर'' राम ने पूछा, ''अवश्य। यदि ऐसा कर सकते हो।''

विदेहराज चकित थे। राम ने आसानी से धनुष झुकाया। ऊपर से दबाकर प्रत्यञ्चा खींची दबाव से धनुष बीच से टूट गया। उसके दो टुकड़े हो गये बच्चों के खिलौने की तरह। यज्ञशाला में सन्नाटा छा गया सब चुप थे एक दूसरे की ओर देख रहे थे।

महाराज जनक की खुशी का ठिकाना न था उनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। जनकराज ने कहा ''मुनिवर! आपकी अनुमति हो तो मैं महाराजा दशरथ के पास सदेंश भेजूँ। बारात लेकर आने का निमन्त्रण। यह शुभ संदेश उन्हें शीघ्र भेजना चाहिए।''

बारात के स्वागत की तैयारियाँ होने लगी। नगर की प्रसन्नता चरम पर थी।

महाराज जनक का संदेश मिलते ही अयोध्या में भी खुशी छा गई बारात को मिथिला पहुँचने में पाँच दिन लग गए।

जनकपुरी जगमगा रही थी। खिड़कियों और छज्जों से झाँकती महिलाएँ। एक नजर राम को देखा ले। राम–सीता की जोड़ी दिख जाए।

महाराजा दशरथ से कहा, ''राजन! राम ने मेरी प्रतिज्ञा पूरी कर बडी बेटी सीता को अपना लिया। मेरी इच्छा है कि मेरी कि मेरी छोटी पुत्री उर्मिला का विवाह लक्ष्मण से हो जाए। मेरे छोटे भाई कुशध्वज को भी दो पुत्रियाँ हैं। माँडवी और शुतकीर्ति। कृपया उन्हें भरत और शत्रुध्न के लिए स्वीकार करे।''

राजा दशरथ ने यह प्रस्ताव तत्काल मान लिया। विवाह के बाद बारात कुछ दिन जनकपुरी में रुकी बाराती बहुओं को लेकर अयोध्या लौटे तो रानियों ने पुत्र–वधुओं की आरती उतारी। स्त्रियों ने फूल बरसाए शंखध्वनियों से गलियाँ गूँज उठी। यह आनन्दोत्सव लगाकर कई दिनों तक चलता रहा।

राजा दशरथ के मन में अब एक ही इच्छा बची थी राम का राज्याभिषेक। उन्हें युवराज का पद देना।

सभा ने तुमुलध्वनि से राजा दशरथ के प्रस्तत्व का स्वागत किया। राम की जय–जयकार होने लगी दशरथ थोडी देर सुनते रहे। सन्तोष के साथ उन्होंने कहा, ''शुभकाम में देरी नहीं होनी चाहिए मेरी इच्छा है कि राम का राज्याभिषेक कल सुबह कर दिया जाए।'' ''यह समाचार पलक झपकते ही पूरे नगर में फैल गया। सब जगह बस यही चर्चा थी राज्याभिषेक की तैयारियाँ शुरू हो गई।

भरत और शत्रुध्न उस समय अयोध्या में नहीं थे। वह अपने नाना केकयराज के गए हुए थे। एकदिन में भरत और शत्रुध्न का अयोध्या आना सम्भव नहीं था।

राजा दशरथ ने इस सम्बन्ध में राम से चर्चा की। कहा कि भरत और शत्रुध्न यहाँ नहीं हैं। मैं चाहता हूँ कि राज्याभिषेक का कार्यक्रम न रोका जाए। उन्होंने राम से कहा, ''जनता ने तुम्हें अपना राजा चुना है। तुम राजधर्म का पालन करना। कुल की मर्यादा की रक्षा अब तुम्हारे हाथ में है।''

राज्याभिषेक की तैयारियाँ रानी कैकयी की दासी मन्थरा ने भी देखी मंथरा जलभुन गई। राम का राज्याभिषेक उसे षडयन्त्र लगा। कैकेयी के विरूद्ध क्रोध से आग बबूला मंथरा रनिवास की ओर भागी सीधे कैकेयी के कक्ष में। वह हाँफ रही थी रानी कैकेयी को सोते हुए देखा।

किसी तरह स्वयं को संभालते हुए मंथरा ने कहा ''अरे मेरी मूर्ख रानी! उठ तेरे ऊपर भयानक विपदा आने वाली है। यह समय सोने का नहीं है होश में आओ रानी कैकेयी नींद से चौककर उठी। उन्हें मंथरा की बात समझ नहीं आई ''बात क्या है।'' तुम इतना घबराई क्यों हो? सब कुशल तो हैं? उन्होंने पूडा?

''कैसा कुशल? कैसा मंगल? सब अमंगल होने वाला है। तुम्हारे सुखों का अंत। महाराजा दशरथ ने कल राम का राज्याभिषेक करने का निर्णय लिया है। अब राम युवराज होंगे।''

''यह तो बहुत शुभ समाचार है।'' कैकेयी ने प्रसन्नता से अपने गले का हार उतारकर मंथरा को दे दिया। ''मैं बहुत प्रसन्न हूँ राम युवराज पद के लिए हर तरह से योग्य हैं।''

रानी तुम्हारी बुद्धि फिर गई है। मति मारी गई है। मंथरा ने हार दूर फैंकते हुए कहा। यह षड़यन्त्र नही ंतो और क्या है? कल सुबह राज्याभिषेक है और भरत को जानबूझकर ननिहाल भेज दिया। समारोह के लिए बुलाया तक नहीं।'' कोई ऐसा उपाय करो कि राजगद्दी भरत को मिले और राम को जंगल भेज दिया जाए।''

कैकयी की बातों का मन्थरा पर असर होने लगा उनका सिर चकरा गया। वह पलंग से उठी तो पाँव सीधे नहीं पडे आँखों में आँसू थे। मन भारी हो गया मंथरा के तर्कों में उन्हें सच्चाई दिखने लगी। ''तुम्हीं बताओ में में क्या करूँ? कैकेयी ने आँसू पोंछते हुए मंथरा से कहा।

मंथरा पलंग से उठी कैकेयी के पास जाकर खडी हो गई उसने कहा, ''याद करो रानी? महाराज दशरथ ने तुम्हें दो वरदान दिये थे। दशरथ से अपना वचन पूरा करने की कहो एक से भरत के लिए राजगद्दी माँग लो। दूसरे से राम को चौदह वर्ष का वनवास।''

कैकयी का चेहरा तमतमाया हुआ था उन्हें मंथरा की बात ठीक लगी उनके मन में एक प्रश्न अब भी था कि यह बात दशरथ से कैसे कहें? मन्थरा ने कहा ''तुम मेले कपड़े पहनकर कोपभवन चली जाओ महाराज दशरथ आएँ तो उनकी ओर मत देखो। बात मत करो। तुम उनकी प्रिय रानी हो तुम्हारा दुःख देख नहीं पाएंगे। बस उसी समय तुम उन्हें पिछली बात याद दिलाना। दोनों वचन माँग लेना'' ''मैं ऐसा ही करुँगी महाराज का षडयन्त्र सफल नहीं होने दूँगी।''

मंथरा का लक्ष्य पूरा हो गया था । रानी कैकेयी कोपभवन में चली गई। मंथरा रनिवास से निकल गई।

दिनभर की गहमागहमी वो बाद दशरथ को रानियों की याद आई तुरन्त रनिवास की ओर चल पड़े उन्हें शुभ समाचार देने सबसे पहले वह कैकेयी के कक्ष की ओर मुडे कैकेयी वहाँ नहीं थी। प्रतिहारी से पूछा। पता चला ि कवे

*Corresponding Author: डा. उर्मिला मीणा

कोपभवन में है। दशरथ को चिन्ता हुई। कैकेयी कोपभवन में। परन्तु क्यों? क्या इसलिए कि उन्हें अब तक सूचना नहीं मिली'' मैं उसे अवश्य मना लूँगा।'' दशरथ ने सोचा।

दशरथ कोपभवन का दृश्य देखकर हैरान हो गए उन्हें कुछ समझ में नहीं आया। कैकेयी जमीन पर लेटी हुई थी बाल बिखरे हुए। गहने कक्ष में बिखरे हुए। कपड़े मैले।

''तुम्हें क्या दुःख है क्या हुआ है तुम्हें? मुझे बताओ अश्वस्थ? हो? राजवैध को बुलाऊँ? दशरथ ने कई सवाल पूछे कोई उत्तर नहीं मिला। कैकेयी रोती रही।

आप मुझे वे दोनों वरदान दीजिए, जिसका संकल्प आपने वर्षों पहले रणभूमि में लिया था।''

महाराजा दशरथ ने हामी भरी।

''कल सुबह राज्याभिषेक भरत का हो राम का नहीं'' कैकेयी ने कहा, दशरथ भौचक रह गए। उन पर वज्रपात सा हुआ। थोडा रुककर कैकेयी बोली, ''राम को चौदह वर्ष का वनवास हो।'' दशरथ को चेहरा सफेद पड़ गया अवाक् रह गए। सिर चकराने लगा। वे मूर्छित होकर गिर पड़े।

कुछ देर में राजा को होश आया कैकेयी की ओर देखा। बड़े कातर भाव से बोले, ''यह तुम क्या कह रही हो? मुझे विश्वास नहीं होता कि मैंने सही सुना है।'' कैकेयी अड़ी रही दशरथ कैकेयी की माँग को अस्वीकार करते रहे। अनर्थ बताते रहे। तब कैकेयी ने अन्तिम हथियार चलाया।

''अपने वचन से पीछे हटना रघुकुल का अनादर है आप चाहे तो ऐसा कर सकते हैं पर तब आप दुनियाँ को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहेंगे। रही मेरी बात आप वरदान नहीं देंगे तो मैं विष पीकर आत्महत्या कर लूँगी यह कलंक आपके माँथे होगा।''

राजा दशरथ यह सुन नहीं सके। दोबारा बेहोश हो गए रातभर बेसुध पड़े रहे। बीच–बीच में होश आता। वह कैकेयी को समझाते गिड़गिडाते धमकाते डराते, पर कैकेयी टस से मस नहीं हुई। सारी रात इसी तरह बीत गई।

कोपभवन के घटनाक्रम की जानकारी बाहर किसी को नहीं थी। यद्यपि सभी सारी रात जागे थे कैकेयी अपनी जिद पर अड़ी हुई। राजा दशरथ उन्हें समझाते रहे। नगरवासी राज्याभिषेक की तैयारी करते हुए गुरु वशिष्ठ की आँखों में भी नीद नहीं थी। आखिर, राम का राज्याभिषेक था दिन चढ़ने के साथ चल–पहल और बढ़ गई। हर व्यक्ति शुभ घडी की प्रतीक्षा में।

महामंत्री सुमन्त कुछ असहज थे। महर्षि के पास गए। दोनों ने महाराज के बारे में चर्चा की पिछली शाम से किसी ने महाराज को नहीं देखा था। कुछ लोगों के लिए इस का कारण आयोजन की व्यस्तता थी महर्षि ने सुमंत को राजभवन भेजा। समय तेजी से बीत रहा था शुभ घडी निकट आ रही थी सारी तैयारियाँ हो चुकी थी। केवल महाराज का आना शेष था सुमन्त तत्काल राजभवन पहुँचे।

कैकेयी के महल की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सुमंत को एक अनजान डर ने घेर लिया। अन्दर पहुँचे। देखा कि महाराजा पलंग पर पड़े हैं। बीमार। दीनहीन। सुमंत का मन भाँपते हुए कैकेयी ने कहा, ''चिन्ता की कोई बात नहीं है मंत्रिवर। महाराजा राज्याभिषेक के उत्साह में रातभर जागे हैं। वे बाहर निकलने से पूर्व राम से बात करना चाहते हैं।''

''कैसी बात?'' सुमंत ने पूछा।

मैं नहीं जानती। अपने मन की बात वे राम को ही बताएँगे। आज उन्हें बुलाकर लाइए।''

दशरथ ने बहुत क्षीण स्वर में राम को बुलाने की आज्ञा दी। सुमंत के मन में कई तरह की आशंकाएँ थीं पर वे उन्हें टालते रहे। राम के निवास के बाहर भारी भीड़ थी। लक्ष्मण भी वहीं थे भवन को सजाया गया था। उसकी चमक–दमक देखने योग्य थी। सुमंत्र को देखकर कोलाहल बढ़ गया लोगों के लिए यह एक संकेत था। राज्याभिषेक के लिए राम को आमंत्रित करने का। सुमन्त ने कहा, ''राजकुमार महाराज ने आपको बुलाया है। आप मेरे साथ ही चले।'' कुछ ही पल में राम वहाँ पहुँच गए। लक्ष्मण साथ थे दोनों भाई विस्मित थे। वे राजश्री वस्त्रों में थे सजे धजे। लोग जय–जयकार करने लगे। पुष्पवर्षा होने लगी। राजकुमार समझ नहीं पा रहे थे कि महाराज ने उन्हें अचानक क्यों बुलाया। लोग समझ रहे थे, कि राजा राज्याभिषेक के लिए जा रहे हैं।

महल में पहुँचकर राम ने पिता को प्रणाम किया। फिर माता कैकेयी को। राम को देखते ही राजा दशरथ बेसुध हो गए। उनके मुँह से एक हलकी–सी आवाज़ निकली, ''राम'' उन्हें होश आया तब भी वे कुछ बोल नहीं सके।

*Corresponding Author: डा. उर्मिला मीणा

राम ने पिता से पूछा, ''क्या मुझसे कोई अपराध किया है? कोई कुछ बोलता क्यों नहीं? आप ही बताइये माते!

म्हाराजा दशरथ ने मुझे एक बार दो वरदान दिये थे। मैंने कल रात वहीं दोनों वर माँगे, जिससे वे पीछे हट रहे हैं। यह शास्त्र सम्मत नहीं है। रघुकुल की रीति के विरूद्ध है। कैकेयी ने बोलना जारी रखा, ''मैं चाहती हूँ कि राज्याभिषेक भरत का हो और तुम चौदह वर्ष वन में रहो। महाराज यही बात तुमसे नहीं कह पा रहे थे!

राम संयत रहे। उन्होंने दृढ़ता से कहा ''पिता का वचन अवश्य पूरा होगा। भरत को राजगद्दी दी जाए। मैं आज ही वन चला जाऊँगा।

राम की शांत और सधी हुई वाणी सुनकर कैकेयी के चेहरे पर प्रसन्नता छा गई उनकी मनोकामना पूर्ण हुई राजा दशरथ चुपचाप सब कुछ देख रहे थे। स्पंदनहीन। कैकेयी की ओर देखते हुए उनके मुख से बस एक शब्द निकला–''धिक्कार!''

कैकेयी के महल से निकलकर राम सीधे अपनी माँ के पास गए। उन्होंने माता कौशल्या को कैकेयी भवन का विवरण दिया। और अपना निर्णय सुनाया। राम वन जायेंगे। कौशल्या यह सुनकर सुध खो बैठी लक्ष्मण अब तक शांत थे। पर क्रोध से भरे हुए। राम ने समझाया और उनसे वन जाने की तैयारी के लिए कहा।

संदर्भ–

1. वा.रा, 1/2/32
2. वा.रा., 212/34
3. वा.रा., 6/50

*Corresponding Author: डा. उर्मिला मीणा